SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-2, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com

# पं० कृष्णराव शंकर पंडित ,एक अद्वितीय गायक

**डॉ० शालिनी वर्मा**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत गायन
शहीद मंगल पाण्डे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मेरठ।

**सारांश**

*गायकी को उन्होंने आत्मसात किया तथा उसका प्रचार व प्रसार किया। पं० कृष्णराव शंकर पंडित जी का जन्म बुधवार 26 जुलाई 1893, ग्वालियर में हुआ बाल्यकाल से ही पंडित जी की संगीत शिक्षा प्रारम्भ हो गई थी। आपने पिता पं० शंकर राव जी से श्री कृष्णराव जी ने संगीत शिक्षा प्राप्त की।शकरराव जी के गायन के साथ–साथ उनके दादा गुरू उस्ताद निसार हुसैन खाँ से भी तालीम मिलती थी। इसके अलावा चौबीसों घंटे अपने चाचाओं की पं० गणपतराव और पंडित एकनाथ जी की निगरानी रहती थी। साथ–साथ बालक कृष्णराव जी के दादा कैलाशवासी विष्णु पंडित जी संस्कृत के श्लोक, गंगा लहरी आदि कंठस्थ करवाते थे। आयु के आठवें वर्ष से ही कृष्णराव पंडित सार्वजनिक रूप से गायन करने लगे थे तथा अपने गुरू एवं पिता शंकरराव पंडित के साथ देश भ्रमण करते हुए कई स्थानों पर उनके साथ गायन करने लगे थे। कृष्णराव जी जिस भी महफिल में कार्यक्रम प्रस्तुत करने जाते वह महफिल पूर्णतयाः संगीतमय हो जाती और रसिक श्रोता झूम उठते। छः फीट का लम्बा, छरहरा बदन, सिर पर टोपी, मस्तक पर सुशोभित कुंकुम, नीले आरक्त एवं नादब्रह्म में विलीन नेत्र, रोबीली मूँछे, अचकन तथा चूड़ीदारा पाजामा अथवा धोती हाथ में घड़ी श्री कृष्णराव पंडित की तेजस्वी मूर्ति सर्वपरिचित ही है। भारतीय संगीत जी ने भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार की सुविधा के लिये सन् 1914 में स्वरलिपि पद्धति का अविष्कार कर लिया था। कृष्णराव जी ने अनेक सांगीतिक शिक्षा की पुस्तकें लिखी तथा उन्हें प्रकाशित करवाई कृष्णराव पंडित जी को उनके महान कार्य के लिये अनेक सम्मान, अलंकार व उपाधियों से विभूषित किया गया है। दिनांक 22 अगस्त, 1989 को पंडित जी नाद ब्रह्म में लीन हो गए।*

**key words:** *कृष्णराव शंकरपंडित , ग्वालियर घराना ,'अष्टांग गायकी ,स्वरलिपि पद्धति ,'शंकर गांधर्व महाविद्यालय', पं० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित*

भारतीय संगीत विद्या और कला की कल्पना बड़ी विशाल है। यह कला नाद ब्रह्म की कल्पना पर आधारित है। प्राचीन काल में भारतीय संगीत दिव्य और अलौकिक माना जाता था और उसका सम्बन्ध ऋषि, मुनिओं से होता था। धर्म, आध्यात्म और साधना के वातावरण ही में उसका जन्म व विकास हुआ तथा मन्दिरों और आश्रमों में उसका पालन–पोषण हुआ।

ख्याल गायन में ग्वालियर के पं० कृष्णराव शंकर पंडित जी का नाम बड़े आदर व सम्मान से लिया जाता है। पं० कृष्णराव शंकरराव पंडित जी संगीत जगत में अपना अद्वितीय स्थान रखते है व तत्कालीन संगीतज्ञो की श्रेणी में उन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, तथा अपनी प्रतिभा, मधुर आवाज, अविलक्षण स्मरण शक्ति, कठोर परीश्रम से भारतीय संगीत में अमिट बनकर अपनी कला की सम्पूर्णता का जो परिचय दिया,उसकी पुनरावृत्ति असम्भव है।

कृष्णराव शंकरपंडित, पं० शंकरराव पंडित जी के पुत्र व परम् शिष्य एक अद्वितीय गायक थे। ग्वालियर की पुरानी गायकी को उन्होंने आत्मसात किया तथा उसका प्रचार व प्रसार किया। पं० कृष्णराव शंकर पंडित जी का जन्म बुधवार 26 जुलाई 1893, ग्वालियर में हुआ''[प] कृष्णराव जी को ''जन्म से ही अभिजात्य घरानेदार गायन एवं वादन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आगे जाकर संगीत से अत्यन्त लगाव और प्रेम बढ़ा। यहाँ तक कि खिलौनों के बजाय बालक कृष्ण राव तानपुरा और तबले के प्रति ज्यादा आकर्षित थे। उनकी आवाज की गुणवत्ता देखकर पूज्य पंडित शंकरराव जी अत्यन्त प्रसन्न होते।''[पप]

बाल्यकाल से ही पंडित जी की संगीत शिक्षा प्रारम्भ हो गई थी। ''आपने पिता पं० शंकर राव जी से श्री कृष्णराव जी ने संगीत शिक्षा प्राप्त की। वे मुश्किल से जब तीन साल के ही थे तब से उनकी संगीत शिक्षा आरम्भ हो गई। साथ–साथ शंकरराव पंडित जी उन्हें उर्दू और मोड़ी लिपि भी सिखाते थे। यह शिक्षा भी स्वरों और रागों में हुआ करती थी।''[पपप] बालक कृष्णराव जब पाँच वर्ष के थे तब ''प्राथमिक विद्यालय माधव गंज और बाद में जनक गंज मिडिल स्कूल में उन्हें प्रवेश दिलवाया गया। बल्कि कृष्ण राव स्कूली शिक्षा और अभ्यास के बावजूद संगीत का घंटों तानपुरा और बायें (डग्गा) के साथ अभ्यास करते रहते थे।''[पअ]

प्रो० लक्ष्मण कृष्ण राव जी ने बताया ''पूज्य दादाजी (शंकर राव जी) ने अपनी प्राचीन धरोहर व परम्परा अपने पुत्र के हाथों में सुरक्षित रखने हेतु उनकी स्कूली शिक्षा बंद करवा दी। इस पर मेरी दादी जी ने बड़ा रोष प्रकट किया। परन्तु दादा जी ने उन्हें समझाया कि हमारा पुत्र नौकरी करने के लिये नहीं यह तो प्रतिभाशाली है इसे ऐसा कलाकार बनाऊँगा कि सारे संसार में मेरा और इस घराने का नाम रोशन करेगा। यह वाणी अक्षरशः सत्य निकली।'' कृष्ण राव शंकर पंडित जी ने संगीत जगत में बहुत ख्याति अर्जित करी।

कृष्णराव पंडित जी ने अत्यन्त निष्ठापूर्वक, कठोर अभ्यास करके, ग्वालियर गायकी को आत्मसात किया। ''आयु के आठवें वर्ष से ही कृष्णराव पंडित सार्वजनिक रूप से गायन करने लगे थे तथा अपने गुरू एवं पिता शंकरराव पंडित के साथ देश भ्रमण करते हुए कई स्थानों पर उनके साथ गायन करने लगे थे।''[अ]

कृष्ण राव जी को ''पं० शकरराव जी के गायन के साथ–साथ उनके दादा गुरू उस्ताद निसार हुसैन खाँ से भी तालीम मिलती थी। इसके अलावा चौबीसों घंटे अपने चाचाओं की पं० गणपतराव और पंडित एकनाथ जी की निगरानी रहती थी। साथ–साथ बालक कृष्णराव जी के दादा कैलाशवासी विष्णु पंडित जी संस्कृत के श्लोक, गंगा लहरी आदि कंठस्थ करवाते थे। इस प्रकार तालीम और रियाज का दौर दिन रात अर्थात आठों प्रहर, समय की हर बेला में होता था।''[अप] शंकरराव पंडित जी कृष्णराव पंडित जी को विशेष तालीम देते। ब्रह्म मुहूर्त में कृष्णराव जी को जंगल ले जा कर स्वर साधना करवाते। खरज से लेकर अति तार सप्तक अंग के स्वरों की साधना, खंड मेरू पर आधारित कठिन अलंकारों का अभ्यास, कृष्णराव जी को करवाया जाता। ''गायन के साथ–साथ पखावज, तबला, बीन और सितार की शिक्षा भी उन्हें प्राप्त हुई।''[अपप]''उस्ताद निसार हुसैन खाँ और पंडित शंकरराव जी ने विभिन्न रागों में तरह–तरह की बंदिशें उन्हें सिखाई, जिनमें ख्याल, टप्पा, तराना अष्टपदियाँ तथा उसके प्रकार जैसे ख्यालनुमा टपपा, ख्यालनुमा तराना, टप्पतरानें, टप्पठुमरी, विलम्बित, मध्य, द्रुत और अतिद्रुत लय के विभिन्न तालों में निबद्ध तरानें, त्रिवट, चतुरंग, ठुमरी, होरी, ध्रुपद, धमार पद आदि की अनेक रागों में हजारों बंदिशें सिखाई गई। सिखाने के बाद इन बंदिशों को प्रतिदिन एक क्रम से दोहराना पड़ता जिसे कि बंदिशों को 'पलटना' बोलते हैं। दायें हाथ से तानपुरा और बाँये हाथ डग्गा पर ठेका देते हुए रोज यह बंदिशें पलटने का क्रम जारी रखना पड़ता, तभी हजारों की संख्या में बंदिशें याद रहती।''[अपपप]

कृष्णराव जी जिस भी महफिल में कार्यक्रम प्रस्तुत करने जाते वह महफिल पूर्णतयाः संगीतमय हो जाती और रसिक श्रोता झूम उठते। गायन के साथ–साथ पंडित जी का व्यक्तित्व भी बड़ा प्रभावशाली थी।

प्रभाकर सोनवलकर जी ने उनके व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखा है 'छः फीट का लम्बा, छरहरा बदन, सिर पर टोपी, मस्तक पर सुशोभित कुंकुम, नीले आरक्त एवं नादब्रह्म में विलीन नेत्र, रोबीली मूँछे, अचकन तथा चूड़ीदारा पाजामा अथवा धोती हाथ में घड़ी श्री कृष्णराव पंडित की तेजस्वी मूर्ति सर्वपरिचित ही है। वार्तालाप में अत्यन्त विनम्र किन्तु स्वाभिमानी एवम् प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पन्न पंडित जी का जीवन सतत् साधना, प्रदीर्घ श्रम, कठिन अध्यवसाय एवं विशुद्ध गुरू भक्ति का जीवन रहा है। अपनी विद्या तथा कर्त्तव्य पर अगाध निष्ठा एवम् विश्वास के कारण उन्होंने जीवन में सदैव सफलता और विजय प्राप्त की है।''[पग]

श्रीमती राधाबाई पंडित जी ने बताया ''पंडित जी का स्वभाव बहुत ही अच्छा था। नियम व धर्म के वें पक्के थे। पंडित जी समय के बहुत पाबन्द थे। समय से खाना, पीना, किसी चीज की अति नहीं, वे स्पष्ट वक्ता थे। एक बार में पंडित जी छः–छः घंटे रियाज करते। बच्चों को भी बड़े प्रेम से शिक्षा देते। परन्तु कभी–कभी गलती करने पर डाँटते भी।''[ग]

कृष्णराव पंडित जी अनवरत अपने गायन से संगीत रसिकों को रिझाते थे। ग्वालियर एवम् ग्वालियर से बाहर दूसरे अनेक शहरों में वे संगीत कला का प्रदर्शन करते। ''बिहार, महाराष्ट्र, पंजाब, बुंदेलखंड, राजस्थान, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि के तमाम शहरों में पंडित जी जाया करते थे। रियासतों में सतारा, बड़ौदा, अलवर, पटियाला, कश्मीर, रायगढ़, भरतपुर, बूँदी, नरसिंहगढ़, दतिया आदि से उनकी कला को भरपूर सम्मान मिला। अविभाजित भारत में मुल्तान से लेकर मद्रास तक और पूर्व में ढ़ाका से लेकर पश्चिम में द्वारिका तक

पंडित जी ने अपनी गायकी की धूम मचा दी थी।''[गप] कृष्णराव पंडित जी संगीत को उन्नति व प्रगति के लिये सदैव प्रयासरत रहे। आकाशवाणी से उनका सम्बन्ध ''1940 की मार्च से''[गपप] जीवन पर्यन्त रहा। इतने लम्बे समय में उन्होंने अनेकों संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

ग्वालियर घराना अपनी 'अष्टांग प्रधान' गायकी के लिए उल्लेखनीय है ये विशेषतायें इस प्रकार है – राग की शुद्धता, स्थाई अन्तरे की कलात्मक एवम् सौन्दर्यपूर्ण प्रस्तुति, आलाप और बोल–आलाप में आकार की विराटता तथा मींड़ का सुन्दर प्रयोग, बहलावे में भावाभिव्यक्ति, तीनों सप्तकों में सहज सन्चरण विलक्षण लयकारी, मुर्की खटके का स्वाभाविक प्रयोग, शुद्ध मुद्रा, सम पर आने का अनूठा अंदाज आदि।ग्वालियर गायकी में ध्रुपद धमार, ठुमरी, टप्पा, तराना आदि का रूप भी सामने आता है, इसलिए यह अन्य शैलियों से विशिष्ट है और वास्तव में इस गंगोत्री और अन्य शैलियों का मुख्य स्त्रोत अथवा जननी कहा जा सकता हैग्वालियर घराने के प्रतिनिधि गायक सीधे बंदिश से ही गायन प्रारम्भ करते है। "ग्वालियर गायकी में किसी बंदिश का स्थायी अंतरा शानदार और कलात्मक ढंग से कहा जाता है। स्वर काल और रचनात्मक श्रृंगार यह सब अनोखे ढंग से एक दूसरे से मिलते है। ख्याल गायन की शोभा स्वरों का घेराव, राग–विस्तार, रचना के शब्दों का लालित्य और उनका कलात्मक उच्चारण स्थाई और अंतरे की तालबद्ध गंभीर व्याख्या गायकी की प्रतिष्ठा एवं गायकी का वैशिष्टय है।"ग्वालियर की गायन शैलियों में ख्याल शैली ही विशेष प्रसिद्ध रही है। ग्वालियर ख्याल गायकी की परम्परा के गायक परम्परागत गायकी (स्थाई–अन्तरा) गाकर उसी के अंगभूत गायकी में राग के क्रमबद्ध न्यास स्वरों के तीनों सप्तकों में रागांग, विलम्बित आलाप एवम् अष्टांग गायकी का प्रयोग करते हुए उन्हीं आलापों की मध्यलय में क्रमबद्ध स्वर संगतियों से बढ़त, गीताक्षरों से बोल आलाप, पश्चात् सपाट, रागांग, गमक की खुली आवाज में आकारयुक्त धीमी तानें द्रुतगति में फिरत रागांग चढ़ी उतरी तानें (आरोही अवरोही ताने) बोलतानें आदि गाते है और यही ग्वालियर घराने की गायकी का साधारण क्रम है।

शंकरराव पडित जी द्वारा स्थापित 'शंकर गांधर्व महाविद्यालय' को चलाना उनके जीवन का एक प्रमुख कार्य था।''इसी महाविद्यालय के लिये उन्होंने अपना तन, मन, धन सर्वस्य अर्पण किया है।''[गपपप] कृष्णराव जी ने भारतीय संगीत जी ने भारतीय संगीत के प्रचार–प्रसार की सुविधा के लिये सन् 1914 में स्वरलिपि पद्धति का अविष्कार कर लिया था। कृष्णराव जी ने अनेक सांगीतिक शिक्षा की पुस्तकें लिखी तथा उन्हें प्रकाशित करवाई जिनका वर्णन इस प्रकार है :–

1– संगीत सरगम सार – 1924 में प्रकाशित

2– संगीत प्रवेश भाग–1 – 1928 '' ''

3– '' '' भाग–2 – 1936 '' ''

4– संगीत आलाप संचार – 1930 '' ''

5– सितार एवं जल तरंग शिक्षा – 1933 '' ''

6– तबला वादन शिक्षा – 1941 '' ''

7– हारमोनियम शिक्षा भाग – 1 – 1924 '' ''

8– '' '' '' '' भाग –2 – 1932 '' ''

कृष्णराव पंडित जी को उनके महान कार्य के लिये अनेक सम्मान, अलंकार व उपाधियों से विभूषित किया गया है। जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है – ''1921 में अखिल भारतीय कांग्रेस अहमदाबाद द्वारा ''गायक शिरोमणि'', 1923 में पटियाला महाराज द्वारा 'लय सम्राट' व हरिवल्लभ संगीत सभा, जालंधर द्वारा 'संगीत विशारद' 1935 में राजा चक्रधर सिंह – रायगढ़ स्टेट द्वारा 'संगीतसम्राट '1948 से शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय द्वारा 'प्रोफेसर एमरिट्स', 1959 में 'राष्ट्रीय गायक', 1961 में इन्दिरा कला संगीत विश्व विद्यालय द्वारा 'डाक्टर ऑफ म्यूज़िक' 1973 में राष्ट्रपति भारत गणराज्य द्वारा 'पदम् भूषण', 1980 में मध्य प्रदेश शासन द्वारा 'तानसेन सम्मान''[गपअ] प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त भी कृष्णशंकर राव जी को अनेकों पदक एवम् उपाधियों से सम्मानित किया गया है।

कृष्ण राव जी का ''विवाह सन् 1909 में गोपिकाबाई पंडित जी''[गअ] से हुआ। परन्तु ''सन् 1939 में गोपिका बाई जी को स्वर्गवास हो गया। 1940 में उन्होंने नासिक निवासी श्री नाना साहेब कुलकर्णी की पुत्री सौ० राधाबाई जी से द्वितीय विवाह किया।''[गअप]कृष्णराव पंडित जी को पाँच पुत्र रत्न प्राप्त हुऐ। ''प्रथम विवाह से पंडित केशवराज जी 1915–1933, पंडित नारायण राव जी 1917–1991, पंडित लक्ष्मण राव जी (जन्म 1934) तथा द्वितीय विवाह से पंडित चन्द्रकांत 1943–1996 तथा पंडित सदाशिव (जन्म 1945)।''[गअपप]पंडित जी के सभी पुत्र गान विद्या में निपुण हैं जिनमें से उनके सुयोग्य पुत्र पं० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित जी ग्वालियर घराने के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में ख्याति प्राप्त गायक हैं। इन्होंने संगीत के प्रचार–प्रसार एवम् संवर्धन के लिये अनेक प्रशंसनीय कार्य कियें है।

कृष्णराव जी के अनेक शिष्य हैं जिनमें से प्रमुखतः पं० बलुआ जोशी, पंडित सदाशिव राज अमृत फल, पं० विश्वनाथ जोशी, पं० एकनाथ सरोलकर, पं० चिन्तामणि जैन, श्रीमती सुमन चौधरी, पं० पांडुरंग राव उमडेकर, जी०एस० मोरघोड़े, पं० पी०डी० सप्तर्षि, आर०डी० सप्तर्षि, केशवराव सुरंगे आदि हैं।

कृष्णराव पंडित जी आजीवन संगीत कला में लीन रहे। ''संगीत का यह महान पुजारी, संगीत विद्या धुरंधर सरस्वती का परम उपासक, श्रेष्ठ और आदर्श शिष्य, कुल दीपक, गुरू–पितृ–मातृ भक्त, शिष्यों और संगीत प्रेमियों के लिये प्रातः स्मरणीय गुरू इस जगत को छोड़ दिनांक 22 अगस्त, 1989 को नाद ब्रह्म में लीन हो गए।''[गअपपप] पंडित जी के देहावसान पर पं० रविशंकर, उस्ताद अमजद अली खाँ, पं० विनय चन्द्र मौदगल्य, पंडित अमरनाथ, डा० सुमति मुटाटकर, उस्ताद नासिर जहीरूद्दीन डागर इत्यादि ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी।

स्वामी पागलदास जी ने कृष्णराव पंडित जी के श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए लिखा है :–

''धन्य ग्वालियर नगर धन, मध्यप्रदेश ललाभ।

जय शंकर सुत राजत, कृष्ण सुपंडित नाम।।

नाम रूप गायन, जिनके गुणि सदा बखाने।

कृष्णराव पंडित सो, सब जग जानै।।

भव्य भाल मुस्कान मधुर, चितवनि अति प्यारी।

गुणग्राही गुण आगर, गुण गरिमा अति वारी।।

राग ताल बंधान गायकी शुद्ध निराली।

द्रुतगति मध्य विलम्बित महाताली अक्स खाली।।

टप्पा ठुमरी ख्याल भजन, गावत अनूप विधि।

मातु शारदा कृपा रहित, जनु चहुंदिशि रिधि सिधि।।''[गपग]

'रसिक कवि' ने मालनी छन्द में कृष्णराव जी की स्तुति करते हुए कहा है :–

''विमल द्विज कुलानां भूषणं शंकरांत्मा

कल्लित ललित विद्या सामवेदं मनीषिन्।।

सकल भुवनं ख्यातिर्गायकं सार्व भौमं

जयति गुरूवरिष्ठं पंडित कृष्णरावम्।।

**अनुष्टुव छन्द**

नादब्रह्म स्वरूपाय श्री गान्धर्व जगद्गुरूम्।

पद्मश्री कृष्णरावाय सभक्ति प्रणमाम्यहम्।।''[गग]

प्रो० यशपाल जी, (चण्डीगढ़) ने बताया ''मैंने कृष्णराव जी को अनेकों बार सुना, देखा एवम् गुणीजनों के बीच चर्चा करते हुए देखा। उनकी वार्तालाप बड़ी उच्चकोटि की होती थी, वे दूसरे कलाकार को बड़े ध्यान पूर्वक सुनते थे। कलाकार छोटा हो या बड़ा या कोई शिष्य बड़े ध्यान से उसको सुनते व शाबासी देते।''आगे यशपाल जी बताते हैं ''कृष्णराव जी पुरानी रीति (परम्परा) के गायक थे तथा जो कुछ भी उन्होंने अपने पिता शंकरराव जी एवम् गुरू निसार हुसैन खाँ जी से सीखा उसे वैसा ही गाते थे। वे पुरानी रीति (परम्परा) की बंदिशे एवं गायकी के साथ बिल्कुल छेड़छाड़ नहीं करते थे। तथा उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं था कि पुरानी बंदिशों एवम् गायकी में जरा भी फेरबदल किया जाए। उन्होंने अपने पिता की सम्पूर्ण गायकी आत्मसात की।''[गगप]

कृष्णराव जी की गायकी के विषय में डा० रमावल्लभ मिश्र जी ने अपने संस्मरण में लिखा है – ''एक बार वाराणसी में पचगंगा घाट पर स्थित मंदिर में कृष्णराव जी का गायन था। श्रोताओं में वाराणसी के लगभग सभी श्रेष्ठ गायक–गायिकाएँ उपस्थित थे। पंडित जी के साथ सारंगी पंडित सुरसहाय (प्रसिद्ध सारंगी वादक स्व० गोपाल मिश्र के पिताजी) और तबले पर श्री बीरू मिश्र जी संगति कर रहे थे। पंडित जी के गायन के उपरान्त चारों ओर से वाह–वाह की प्रशंसासूचक ध्वनि हो रही थी।सभा समाप्त होने के बाद मैं वाराणसी की

अंधेर गलियों में धीरे–धीरे चल रहा था। मेरे आगे भारत प्रसिद्ध गायिका विद्याधरी जी और संगीत रत्न श्री बीरू जी चल रहे थे। मैं उन दोनों की बातें सुन रहा था।

विद्याधरी जी ने बीरू जी से पूछाः– ''कहा गुरू, पंडित कैसन गाए?''

बीरू जी : ''राग–सुर की बात तो हम जानत नाहीं है।''

विद्याधर जी : ''लय–ताल के बारे में बतावा?''

बीरू जी : ''बड़ा बेढ़ब हौ।''

विद्याधर जी : ''कैसन''

बीरू जी : ''देखा, बाई जी, जब हम तुहरे साथ, औरन के साथ बजावला, हम कौनो खास धियान देए के नाही परत है। इस **पंडित के साथ जरा आँख झपक तै, पंडित उठाय पटक देतो।** तैयार लय मा तान कहत–कहत इक दम सा जौन लय बढ़ाय के सम पे आवला उह का जवाब नाही है। सुर की तू जाना।''

विद्याधर जी : ''पंडित सुरों का पंडित हों। भौत मुसकिल और नीक हो।''[गगपप]

कृष्णराव पंडित जी तो लय के बादशाह थे। तुषार पंडित के अनुसार ''सम पर आने का पंडित जी का अनूठा अंदाज है। पलक झपकते ही तीन सप्तक की तान लेकर तुरन्त मुखड़ा पकड़ते। अचरज की बात यह कि हर बार मुखड़ा वे अलग ही ढंग से पकड़ते थे। इन सब के पीछे, पंडित जी की दीर्घ तपस्या, तालीम, विलक्षण प्रतिभा, लय पर असाधारण अधिकार, अप्रतिम तैयारी थी।''[गगपपप] पं० रमेश नाडकर्णी के अनुसार ''पंडित कृष्णराव शंकर पंडित को ग्वालियर घराने का महान गान महर्षि कहना ही उपयुक्त होगा। उनके गायन में उत्तुंग पर्वत शिखर की शक्ति और सलिल तरंगो के चैतन्य का अनुभव होना आवाज में विलक्षण प्रवाह और राग की समग्र दृष्टि मिलती। खुली जोरदार आवाज में लय में पिरोयी हुई बोलतानों और पेंचयुक्त स्पष्ट तानों की प्रस्तुति आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श रहेगी। उनका गायन प्रारम्भ होते ही राग के दर्शन हो जाते और तानों में अद्भुत प्रवाह मिलता।''[गगपअ] बद्री प्रसाद शर्मा जी ने भरतपुर की एक विराट संगीत सभा के बारे में बताया जिसमें श्री कृष्ण राव जी का गायन था ''स्व० श्री बिन्दू खाँ सारंगी पर उनकी संगति कर रहे थें। तराना गायन में विलक्षण लयकारियों के साथ संगत करते समय स्व० बिन्दु खाँ साहब का साफा सिर से गिर पड़ा श्रोतागण हँस पड़े। इस पर गुस्से में खाँ साहब बोले – ''हँसते क्यों हो। पंडित जी के साथ संगत करना हँसी खेल नहीं है। मैं ही हूँ जो इतनी संगत भी कर रहा हूँ।''[गगअ] कृष्णराव जी के अनेक रिकार्डस सुरक्षित हैं जिससे वे भविष्य में भी आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

1. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित , पृ० 14
2. हमारे संगीत रत्न, पृ० 130
3. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित , पृ० 14 वही
4. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित , पृ० 14

5. समारोह पत्रिका 1964, पृ० 41

6. भारतीय संगीत के अमर साधक ,प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ० 15

7. वही, पृ० 15, 16

8. भारतीय संगीत के अमर साधक , प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ० 16

9. समारोह पत्रिका 1964, पृ० 43

10. साक्षात्कार, श्रीमती राधाबाई पंडित, 5.3.2006

11. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ० 15

12. समारोह पत्रिका 1964, पृ० 42

13. समारोह पत्रिका 1964, पृ० 43

14. भारतीय संगीत के अमर साधक – प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित – पृ० 30

15. वही, पृ० 18

16. वही

17. वही ,पृ० 32

18. भारतीय संगीत के अमर साधक, प्रो० लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, पृ० 26

19. स्वामी पागलदास, शंकर गांधर्व महाविद्यालय हीरक जयन्ती वर्ष स्मारिका,पृ० 74

20. शंकर गांधर्व महाविद्यालय हीरक जयन्ती वर्ष स्मारिका,पृ० 74

21. साक्षात्कार, प्रो० यशपाल,चंडीगढ़ – दिनांक 24.9.2006

22. संगीत, जुलाई 1993, पृ० 269

23. कलावार्ता जु० 1992 , पृ० 34

24. वही, पृ० 40

25. कलावार्ता, जु० 1992, पृ० 53

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-01, Issue-02, Oct-Dec- 2023
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2023/21

# Certificate Of Publication

***This Certificate is proudly presented to***

डॉ० शालिनी वर्मा

***For publication of research paper title***

"पं० कृष्णराव शंकर पंडित ,एक अद्वितीय गायक"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-02, Month December, Year- 2023.

**Dr. Neeraj Yadav**
**Editor-In-Chief**

**Dr. Lohans Kumar Kalyani**
**Executive-chief- Editor**

**Note:** This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE